आज की मुरली का सार ----- Date: 29-05-2014

बाबा कहते हैं, शिवबाबा वन्डरफुल बाप, टीचर और सतगुरु हैं, उसे अपना कोई बाप नहीं, वह कभी किसी से कुछ सीखता नहीं, उन्हें गुरु की दरकार नहीं, ऐसा वन्डर खाकर तुम्हें याद करना चाहिए.

परमधाम में हम आत्माओं का उलटें कल्प वृक्ष का जो चित्र हैं उसमें शिवबाबा को सबसे ऊपर में बताते हैं. उसके ऊपर कोई नहीं. परमधाम में भी वह सबसे ऊपर में कल्प वृक्ष के बिजरूप में हैं तो वहाँ भी उनका कोई पिता नहीं. जब की हम सब जीव-आत्माओं के दो बाप हैं, एक हैं लौकिक और दूसरा फिर हैं पारलौकिक. लेकिन शिवबाबा कभी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते तो उनका फिर लौकिक बाप भी नहीं हैं. इसलिए शिवबाबा का कोई बाप नहीं, वही सब आत्माओं का पिता हैं.

बाबा हमारा टीचर भी हैं क्योंकि वही हमें अभी पढ़ा रहे हैं. बाबा हमें मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं. बाबा में ही सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हैं या कहे बिज में ही सारे कल्प वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज रहता हैं. इसलिए उन्हें हम ज्ञान का सागर कहते हैं. लेकिन बाबा का कोई टीचर नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने ये ज्ञान कही से लिया नहीं हैं. जब की हम मनुष्य आत्माओं का तो कोई ने कोई टीचर जरूर होता हैं, जो हमें लौकिक पढ़ाई पढ़ाते हैं. बाबा आकर हिंदी में मुरली चलाते हैं इसका मतलब भी ये नहीं हैं की बाप ने ये हिंदी भाषा पढ़ी हैं, नहीं, वह तो बाबा जिस रथ (ब्रह्मा का तन) में आते हैं वह जो भाषा जानते हैं वही भाषा में बाबा ज्ञान सुनाएगा. शिवबाबा कभी किसी से कुछ भी सीखता नहीं हैं, इसलिए उनका कोई भी टीचर नहीं हैं. लेकिन उन में सारे कल्प का आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हैं जो हमें कल्प के अन्त में आकर सुनाते हैं, इसलिए उन्हें टीचर कहा जाता हैं.

हम देवी-देयताओं की आत्मायें द्वापर से देह-अभिमानी बनती हैं और इस के कारण विकारों में जाती हैं. विकारी आत्मायें सद्गति में जाने के लिए गुरु करती हैं. अब कल्प के अन्त में स्वयं परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा ने आकर हमें समझाया हैं कि कैसे वही सर्व आत्माओं का सच्चा सतगुरु हैं क्योंकि वही विश्व की सर्व आत्माओं को (जिसमें गुरुओं, धर्मगुरुओं, सन्यासी सब आ जाते हैं) गति-सद्गति देते हैं. हम सब जानते हैं हमारे प्यारे शिवबाबा तो ऐवर प्योर हैं जो सर्व को प्योर बनाते हैं. तो उन्हें सद्गति में जाने कि दरकार नहीं या कहेंगे गुरु करने की दरकार नहीं.

ॐ शांति.